शाक्त तंत्र के आलोक में शक्ति का स्वरुप

ममता चौधरी[1]
डॉ. उपेन्द्र बाबू खत्री[2]
Email Id- mamtachoudhary.yoga@gmail.com
साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय साँची, रायसेन (मध्यप्रदेश)

सार संक्षेपिका

भारत में पुरातन काल से ही साधना की मुख्यतः वैदिक एवं तांत्रिक दो धाराएँ प्रवाहित होती रही हैं। दोनों ही धाराएँ समानांतर रूप से मानव को साधनात्मक दृष्टि से चेतना के उन्नयन में सहायक रही हैं। इसी क्रम में मानव के आध्यात्मिक पुनरुत्थान में शाक्त परंपरा एक सशक्त माध्यम रही है। कालांतर में शक्ति की उपासना आदिशक्ति, जगत जननी, जगदम्बा तथा मातृरूप में की जाने लगी। शक्ति वह साधनात्मक एवं आध्यात्मिक प्रक्रिया है जिसमें निर्माण, विकास एवं विनाश की समस्त संभावनाएं समाहित होती हैं। मूल रूप में शक्ति एक ही है जो इच्छा, ज्ञान, क्रिया, आनंद एवं चित शक्ति के रूप में अभिव्यक्त होती है। यही शक्ति प्रकृति, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, दशमहाविद्याओं इत्यादि रूपों में पूजित है। शक्ति उपासना की प्रक्रिया द्वारा साधक उच्च स्तर की चेतना को प्राप्त करते हैं। शक्ति की उपासना, साधना आदि करने वाले साधक शाक्त कहलाते हैं, इसी परम्परा को शाक्त परम्परा, शाक्त सम्प्रदाय या शाक्त तंत्र कहा जाता है। शक्ति में पूर्ण रूप से लय हो जाना ही शाक्त तंत्र का उद्देश्य है। इस शक्ति को अनुभव करके अद्वैत की स्थिति को प्राप्त किया जाता है। अत: प्रस्तुत शोध पत्र में शाक्त तंत्र में निहित शक्ति की अवधारणा एवं शक्ति के स्वरुप का विवेचन किया गया है।

कूट शब्द- तंत्र, शक्ति, शाक्त तंत्र, चेतना, दशमहाविद्या।

भूमिका

मनुष्य शक्ति की आराधना तथा शक्ति संचय के उपायों की खोज अनादिकाल से करता आ रहा है, क्योंकि शक्तिहीनों का कोई अस्तित्व नहीं होता है। प्रत्येक मनुष्य आनंद को प्राप्त करने तथा उसे बनाये रखने के लिए प्रारंभ से ही प्रयासरत रहा है। इस आनंद को बनाये रखने हेतु 'शक्ति' आवश्यक

[1] पीएच. डी. शोधार्थी (योग) साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची, रायसेन (मध्यप्रदेश).
[2] सहायक प्राध्यापक (योग) साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची, रायसेन (मध्यप्रदेश).

होती है, इसीलिए श्रुति भी कहती है कि **'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो'** अर्थात् बलहीनों को आत्मा की प्राप्ति नहीं होती है। शक्ति के अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। शक्ति जड़, चेतन अथवा चराचर जगत में व्याप्त है। जगत के सभी कार्य शक्ति द्वारा ही संपन्न किये जाते हैं। आध्यात्मिक मार्ग का प्रवेश द्वार भी शक्ति ही है, क्योंकि इसके अभाव में आध्यात्मिक यात्रा की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। शक्ति प्रकट या अव्यक्त रूप में, परमाणु से लेकर सबसे शक्तिशाली आकाशगंगा में स्थित है। शक्ति मूर्त या अमूर्त विचार में स्थित है। ब्रह्म की सक्रिय अवस्था को शक्ति कहा जाता है। यही शक्ति प्रकृति, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, दशमहाविद्याओं इत्यादि रूपों में पूजित है। शक्ति उपासना की प्रक्रिया द्वारा साधक उच्च स्तर की चेतना को प्राप्त करते हैं। शक्ति की उपासना, साधना एवं आराधना आदि करने वाले साधक शाक्त कहलाते हैं। शक्ति में पूर्ण रूप से लय हो जाना ही शाक्त तंत्र का उद्देश्य है।

शोध पत्र की आवश्यकता

तंत्र प्रसुप्त चेतना के जागरण का विज्ञान है। यह शक्ति के जागरण, सुनियोजन, चेतना के विस्तार आदि मार्गों को प्रशस्त करता है। शक्ति चेतन, जड़, जंगम, स्थावर आदि में व्याप्त है। शक्ति के स्वरुप को समझना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि शक्ति के अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह इच्छा, ज्ञान, क्रिया, चित् एवं आनंद शक्ति में रूपांतरित होकर समस्त जगत का संचालन करती है। शक्ति के समस्त स्वरूपों की उपासना से चित्त को परिष्कृत करके अद्वैत भाव को स्थापित किया जाता है, जिससे चेतना का विस्तार होता है। इसे ही दृष्टिगत रखते हुए शक्ति के स्वरुप की व्याख्या इस शोध पत्र में की गई है।

शाक्त तंत्र

तंत्र का वह सम्प्रदाय, जो शक्ति की उपासना, साधना, विधि एवं विज्ञान का क्रमबद्ध रूप में विस्तार से वर्णन करता है वह शाक्त सम्प्रदाय **शाक्त तंत्र** कहलाता है। **शाक्त** शब्द की व्युत्पत्ति **शक्ति** शब्द से हुई है। शक्ति शब्द की व्युत्पत्ति **'शक्लृ'** धातु से हुई है। **शब्दकल्पद्रुम कोष**[3] के अनुसार **'शक्तिदेवताऽस्य'** तथा **'शक्तिशास्य देवता'** अर्थात् शक्ति रूपी देवता या शक्ति उपासना करने वाले शाक्त कहलाते हैं। **सिद्धसिद्धांत पद्दति**[4] के अनुसार- 'जो अपनी चेतना का निरुत्थान करके उसे विस्तृत करके उसके ही आनंद का निरंतर अनुभव करता है, उसे शाक्त कहते हैं।' यह स्फुरित हुआ विश्व जिस शक्ति के बल से प्रकट हुआ है, उस शक्ति को जो जानता है, वही शाक्त कहलाता है।[5] शाक्त का

[3] शब्दकल्पद्रुम, पंचम भाग पृष्ठ संख्या- 43.

[4] सिद्धसिद्धांत पद्दति- 6/53.

[5] सिद्धसिद्धांत पद्दति- 6/52.

अर्थ है शक्तिपुजक सम्प्रदाय अर्थात् जिस सम्प्रदाय का इष्ट शक्ति है उसे की शाक्त कहते हैं।[6] शाक्त सम्प्रदाय की अधिष्ठाता देवी शक्ति है। शक्ति अनेक रूपों में उपासकों के द्वारा पूजी जाती है। शाक्तमत में **सर्वं शक्तिमयं जगत** या **शक्तिरुपं जगत सर्वम्** कहकर शक्ति को ही ब्रह्मांड की सर्वेसर्वा कहा गया है। शक्ति को ही ब्रह्मांड की जननी कहा गया है, यह ही सृष्टि का सृजन, संचालन और संहार करती है।[7]

शक्ति का अर्थ एवं परिभाषा

शब्द व्युत्पत्ति के आधार पर शक्ति शब्द **'शक्लृ'** धातु में **'क्तिन्'** प्रत्यय की संयोजना से संपन्न होता है। शक्ति शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है परन्तु शक्ति का सामान्य अर्थ विभिन्न कोशों के आधार पर सामर्थ्य से लिया गया है। वह ऊर्जा जो गति में निरंतरता बनाये रखती है, शक्ति कहलाती है। **"'शक्ति कायजनन सामर्थ्यम्'** अर्थात् कोई ऐसा तत्व जो कोई काम करता, करवाता या क्रियात्मक रूप सें अपना प्रभाव दिखाता हो, उसे शक्ति कहते हैं।"[8] शक्ति को बल, शौर्य, पराक्रम, योग्यता, धीरता एवं ऊर्जा भी कहा जाता है। शक्ति ही स्वयं आनंद एवं अनानंद, विज्ञान एवं अविज्ञान, ब्रह्म एवं अब्रह्म तथा पंचीकृत एवं अपंचीकृत महाभूत है। यह सारा जगत शक्ति ही है।

भारतीय परम्परा में शक्ति की कल्पना बुद्धि, चेतना, शांति, स्मृति, तुष्टि, पुष्टि, लक्ष्मी, माता आदि अनेक रूपों में हुई है। शक्ति लिंगातीत है अर्थात् शक्ति स्त्री एवं पुरुष तत्व से अतीत होती है।

शक्ति वह साधनात्मक एवं आध्यात्मिक प्रक्रिया है जिसमें निर्माण, विकास एवं विनाश की समस्त संभावनाएं समाहित होती हैं। मूल रूप में शक्ति एक ही है जो इच्छा, ज्ञान, क्रिया, आनंद एवं चित् शक्ति के रूप में अभिव्यक्त होती है। यही सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता, संहारकर्ता, तिरोधान एवं अनुग्रहकर्ता है। वह ऊर्जा जो गति में निरंतरता बनाये रखती है 'शक्ति' कहलाती है। शाक्त दर्शन के मूल में जो शक्ति है, उसे चिद्रुपा कहा गया है। प्रत्यभिज्ञाहृदयम् में इसे **"चितिः स्वंत्रता विश्वसिद्धि हेतुः"** कहा गया है। आदि शंकराचार्य ने इसे अव्यक्तनामा, परमा, ईशा, अनादि, अविद्या, परा, प्रकृति और माया कहा है। यह शक्ति शिव से अभिन्न है और यह ही विश्व का रूप लेकर प्रकट होती है। शिव शक्ति से संयुक्त होने पर ही सृष्टि उत्पत्ति करने में समर्थ होते हैं। शिव और शक्ति

[6] मालवीय, डॉ. सुधाकर एवं चित्तरंजन मालवीय. *शक्तिसंगम तंत्र- सुन्दरीखण्ड*. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, 2019, भूमिका, पृष्ठ संख्या- 2.

[7] सृष्ट्वाऽखिलं जगदिदं सदसत्स्वरूपं शक्त्या स्वया त्रिगुणया परिपाति, विश्वम्। संहत्य कल्पसमये रमते तथैका तां सर्वविश्वजननीं मनसा स्मरामि।। देवी भागवत पुराण- 1/2/5.

[8] नालंदा विशाल शब्द सागर, पृष्ठ संख्या- 1319.

की एकात्मता है। शक्ति का लक्षण बताते हुए **तंत्रपारिजात**[9] में कहा गया है कि जो वस्तु में कार्योत्पादनोपयोगी अपृथक सिद्ध धर्म विशेष हैं, उसी को शक्ति कहते हैं।

शाक्त तंत्र में शक्ति का स्वरुप

साधना की आरंभिक अवस्था में शक्ति की निराकार रूप में उपासना प्राय: कठिन प्रतीत होती है इसीलिए साधक मूर्ति आदि के रूप में शक्ति की साकार उपासना करते हैं। साधना के इस मार्ग में साधक साकार से निराकार, स्थूल से सूक्ष्म, दृश्य से अदृश्य, ज्ञात से अज्ञात की यात्रा करता है। शाक्त साधक मूर्ति आदि स्थूल जगत को चेतना का पुंज ही मानते हैं। परमेश्वर की स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण जगत की सम्पूर्ण कृति में शक्ति का समावेश है। 'उसी शक्ति से नाद एवं नाद से बिंदु उत्पन्न होता है।'[10] इस प्रकार शाक्त तंत्र में शक्ति एक होते हुए भी अनेक स्वरूपों में अभिव्यक्त होती है। '**शक्तिसूत्र**[11] के अनुसार सत् ज्ञान स्वरुप, चित् इच्छा स्वरुप और क्रिया आनंद स्वरुप बनते हैं। यही शक्ति का सोपाधिक स्वरुप है।' चेतना के विस्तार काल में जो स्पंदन होता है, वही शक्ति है। बीज, नाद एवं बिंदु को मिलाने से त्रिकोण बनता है। त्रिकोण के मध्य का स्पंदन ही सृष्टि का रूप लेकर प्रकट होता है। इस त्रिकोण की तीन रेखाएँ पश्यन्ति, मध्यमा एवं वैखरी तीन प्रकार के शिवांश ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र तथा तीन प्रकार की शक्तियाँ इच्छा, ज्ञान और क्रिया है। इन्हें ही महासरस्वती, महालक्ष्मी तथा महाकाली कहते हैं। महासरस्वती सत्वगुण प्रधान है, महालक्ष्मी रजोगुण प्रधान है तथा महाकाली तमोगुण प्रधान है।[12] इन तीन महाशक्तियों के अतिरिक्त शाक्त तंत्र में दशमहाविद्याओं की उपासना भी की जाती है।

महासरस्वती

देवी भागवत में कहा गया है कि सृष्टि की उत्पत्ति के समय दुर्गा, राधा, सावित्री, लक्ष्मी और सरस्वती की उत्पत्ति हुई थी।[13] लक्ष्मी और गंगा के साथ सरस्वती का भी विष्णु की पत्नी के रूप में उल्लेख किया गया है।[14] गंगा ने सरस्वती को श्राप दिया था जिसके कारण सरस्वती को मृत्यलोक में नदी के रूप में अवतरित होना पड़ा।[15] महासरस्वती वेदांत का सार है। इसकी पूजा विवेक का उदय, बुद्धि, वृद्धि, इच्छा शक्ति एवं ज्ञान शक्ति के विकास के लिए की जाती है।

[9] तंत्रपारिजात- 2.17.

[10] शारदा तिलक- 1.7.

[11] सरस्वती, स्वामी सच्चीदानंद. *शक्तिसूत्र.* वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2020, पृष्ठ संख्या-47.

[12] आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा. *तंत्र महाविज्ञान द्वितीय खंड.* मथुरा: शेखर प्रिंटलेंड, वृन्दावन दरवाजा, 1966, पृष्ठ संख्या- 320.

[13] देवी भागवत पुराण- 9.1.1.

[14] देवी भागवत पुराण- 9.6.17.

[15] देवी भागवत पुराण- 9.6.40.

सरस्वती को श्वेत विग्रह वाली तथा विद्या की देवी के रूप में वर्णित किया जाता है। परब्रह्म से सम्बन्ध रखने वाली वीणा, बुद्धि, विद्या तथा ज्ञान की अधिष्ठात्री सर्वविद्या स्वरुप जो देवी है वे ही सरस्वती है।[16] मनुष्य को बुद्धि, कविता, मेधा प्रतिभा और स्मृति इन्हीं की कृपा से प्राप्त होती है। सरस्वती हाथ में वीणा और पुस्तक लिए रहती है।

वाग्बुद्धि विद्याज्ञानाधिष्ठात्री च परमात्मनः।
सर्वविद्यास्वरूपा या सा च देवी सरस्वती।।[17]

इसलिए सरस्वती को वाणी, बुद्धि, विद्या और ज्ञान की देवी कहा जाता है।

महालक्ष्मी

लक्ष्मी जगत की स्थिति रूपी केंद्र का प्रतिनिधित्व करती है। इसे ही परम पुरुष श्रीहरि की शक्ति कहा जाता है। महालक्ष्मी को विष्णु की शक्ति और सम्पूर्ण संपत्तियों की अधिष्ठाती कहा गया है।[18] यह दुर्गुणों से रहित, परम सुंदरी, अनुपम, संयम, श्रेष्ठ स्वभाव से संपन्न तथा समस्त मंगल कार्यो की प्रतिमा है। अपने भक्तों पर कृपा करना तथा अपने स्वामी से प्रेम करना इसका स्वाभाविक गुण है। अखिल विश्व की सारी संपत्तियाँ इन्हीं का स्वरुप हैं। लक्ष्मी का अभिप्राय सिर्फ सम्पति से नहीं होता है, बल्कि उन्नति, सम्मान, ऐश्वर्य एवं आनंद से भी होता है। यह योग से ही उत्पन्न और योग को ही जन्म देने वाली है। **लक्ष्मीतंत्र** में लक्ष्मी को प्रसन्न करने के चार उपाय- कर्म, ज्ञान, भक्ति और न्यास बताये गये हैं।[19]

महाकाली

महाकाली काल की नियंत्रण शक्ति है। काली वह शक्ति है जो सृष्टि का आदिकारण है, काल संकलन करती है, आद्या है और आदिभूत है। यह जगत की संहार शक्ति है। काली कृष्ण वर्ण युक्त होती है। काली की उपासना परा, परापरा एवं अपरा रूपों में की जाती है। महालक्ष्मी ने जगत को शून्य देखकर तमोगुण युक्त आकार को ग्रहण किया, जिसके शरीर की कांति काले रंग की थी। आकार चार भुजाओं युक्त था जिसमें ढाल, तलवार, प्याला एवं कटा मस्तष्क धारण कर रखा था। उन्होंने वक्ष: स्थल पर कबंध एवं मुंड माला धारण कर रखी थी। उसी शक्ति का नाम महाकाली था।

दशमहाविद्या

शाक्त तंत्र में शक्ति की दश मूल साधना पद्धतियाँ हैं, जिन्हें दश महाविद्याओं के नाम से जाना जाता है। दशमहाविद्याओं का सम्बन्ध भगवान शिव की पत्नी सती से है। **देवी भागवत पुराण** के अनुसार, दशमहाविद्याओं की उत्पत्ति भगवान शिव और उनकी पत्नी सती के बीच एक विवाद के कारण हुई। **महाकाल संहिता** के अनुसार, विभिन्न देवता विभिन्न युगों में फल प्रदान करते हैं, किन्तु चारों

[16] देवी भागवत पुराण- 9.1.29-30.
[17] देवी भागवत पुराण- 9.1.25-26.
[18] देवी भागवत पुराण- 9.4.71-85.
[19] लक्ष्मी तन्त्रं, पृष्ठ संख्या- 146.

ISSN: 3049-1258

युगों में फल प्रदान करने की सामर्थ्य एकमात्र दश महाविद्याओं में है। इन दश महाविद्याओं में काली, तारा और सुन्दरी का विशेष महत्व है।[20] शक्ति प्रयोजन के अनुरूप दश बिंदुओं में कलात्म रूप से महाविद्या के रूप में आविर्भूत होती है। महाविद्याएँ दश हैं और इन्हें ही तंत्र शास्त्र में माँ भगवती के दस भेद बताये गये हैं। 1. काली 2. तारा 3. षोडशी 4. भुवनेश्वरी 5. भैरवी 6. छिन्नमस्ता 7. धूमावती 8. बगलामुखी 9. मातंगिनी 10. कमला।

क्र.	शक्ति	शक्ति के अन्य नाम	विद्या	शिव
1.	महाकाली	-	महाविद्या	महाकाल
2.	तारा	-	श्रीविद्या	अशोभ्य
3.	षोडशी	त्रिपुरा सुंदरी	सिद्ध विद्या	पञ्चवक्त शिव
4.	भुवनेश्वरी	राजराजेश्वरी	सिद्ध विद्या	त्र्यम्बक शिव
5.	छिन्नमस्ता	-	विद्या	कबंध शिव
6.	भैरवी	त्रिपुर भैरवी	सिद्ध विद्या	दक्षिणा मूर्ति
7.	धूमावती	अलक्ष्मी	विद्या	-
8.	वल्गामुखी	बगलामुखी	सिद्ध विद्या	एकवक्क्त रूद्र
9.	मातंगी	-	विद्या	मतंग
10.	कमला	लक्ष्मी	विद्या	सदाशिव विष्णु

इस प्रकार काली से लेकर कमला तक दस महाविद्यायें गति, स्थिति, विस्तार, नियंत्रण, सृष्टि और व्यष्टि, जन्म-मरण, भरण-पोषण, उन्नति-अवनति, बन्धन तथा मोक्ष की अवस्थाओं के प्रतीक हैं। ये अनेक होते हुए भी वस्तुतः परमात्मा की एक ही शक्ति हैं।

दश महाविद्याओं में भगवती षोडशी (त्रिपुरा सुंदरी), भुवनेश्वरी तथा छिन्नमस्ता रजोगुण प्रधान तथा सत्वगुण युक्त है अतः ये गौण रूप से मुक्तिदायी है। धूमावती, भैरवी, बगला, मातंगी तथा कमला ये सब देवियाँ तमोगुण प्रधान हैं।

दशों महाविद्याओं को दो कुलों में विभक्त किया गया है-

1. **काली कुल-** इस कुल के अंतर्गत् काली, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता तथा तारा महाविद्या आती हैं।
2. **श्री कुल-** इस कुल के अंतर्गत् षोडशी, बगलामुखी, त्रिपुरा भैरवी, मातंगी, धुमावती तथा कमला महाविद्या आती हैं।

काली महाविद्या

दश महाविद्याओं में प्रथम स्थान काली का है। जिससे काल शक्ति का अनुभव होता है और जिसका सम्बन्ध काल या समय से होता है, उसे

[2020] महामहोपध्याय गोपीनाथ कविराज. *तांत्रिक साहित्य.* उत्तर प्रदेश: हिन्दी समिति, 1972, पृष्ठ संख्या- 27.

ISSN: 3049-1258

काली कहा जाता है। काल अर्थात् वर्तमान काल, भूत काल तथा भविष्य काल इन्हें काल चक्र भी कहते हैं। काली का सम्बन्ध प्रलयकाल से है इसलिए इसका वर्ण कृष्ण है। इस काल सिद्धांत को समझने के लिए काली की साधना की जाती है।[21] जब जगत का लय हो जाता है तब सारा संसार शमशान बन जाता है, तब काली का विकास होता है। साधक आसक्ति, मोह और लगाव का त्याग कर देता है और सम्पूर्ण जगत शमशान के तुल्य लगने लगता है। भगवती काली को आदिरूपा, आद्या, विद्या, ब्रह्मस्वरूपिणी तथा कैवल्य देने वाली कहा जाता है। 'दुर्गा सप्तशती' के अनुसार शुम्भ-निशुम्भ के उपद्रव से व्यथित देवताओं ने हिमालय पर 'देवीसूक्त' से बार-बार प्रणाम किया। तब गौरी देह से कोशिकी प्रकट हुई और उनके अलग होते ही अम्बा पार्वती का स्वरुप कृष्ण वर्ण का हो गया। वे ही काली नाम से विख्यात हुई।[22] यह अजन्मा तथा निराकार है परन्तु भक्त इनकी उपासना काल्पनिक साकार रूप में करते हैं इस रूप में भगवती काली साकार रूप में स्थित हैं । इस प्रकार निराकार होते हुए भी साकार हैं तथा अदृश्य होते हुए भी दृश्य रूप में हैं।

काली की उपासना का सम्बन्ध कुंडलिनी शक्ति से है। जब साधक साधना करता है तो साधना के दौरान इस शक्ति का जागरण होता है यह समस्त चक्रों का भेदन करते हुए सहस्त्रार चक्र तक पहुँचती है, जिससे साधक की चेतना में परिवर्तन होता है और अपने अंतिम लक्ष्य शिव का शक्ति के साथ मिलन हो जाता है। जब काली शक्ति का जागरण होता है तो साधक को सम्पूर्ण संसार शमशान की तरह दिखाई देता है। शमशान अर्थात् सम्पूर्ण वस्तुओं में नश्वरता के भाव का उदय होना। काली की सिद्धि के लिए साधना वीर भाव से की जाती है। साधना के द्वारा अहंता, ममता तथा भेद बुद्धि कम होने लगती है तथा साधक अद्वैत की ओर बढ़ने लगता है। तांत्रिक मार्ग में काली की उपासना गुरु से दीक्षा लेकर या पूर्ण शरणार्थी होकर की जाती है।

तारा महाविद्या

श्री तारा महाविद्या को दश महाविद्याओं में द्वितीय स्थान प्राप्त है इसलिए यह द्वितीय महाविद्या के रूप में प्रसिद्ध है। तारा शब्द तृ धातु से बना है जिसका अर्थ होता है तारना या पार करना। तारण करने वाली शक्ति को तारा कहा जाता है। इसका शब्दार्थ भी यही है **'तरत्यनया सा तारा'** अर्थात् भवसागर से जो तारती है वह तारा है। भगवती तारा जल के भय को दूर करती है। त्रितापों (आदिभौतिक, आदिदैविक, आध्यात्मिक) का नाश

[21] सरस्वती, स्वामी निरंजनानन्द. *तंत्र दर्शन.* देवघर: श्री पञ्चदशनाम परमहंस अलख बाड़ा पनिया पगार, रिखिया, 1993, पृष्ठ संख्या- 75.

[22] दुर्गासप्तशती- 5.88.

करने वाली है। तंत्र शास्त्र में तारा के छः रूप बताये गये हैं- उग्रतारा, नील सरस्वती, एकजटा, शुक्ल तारा, नीलतारा और चित्रा।[23] ओंम् को तारा का बीज मन्त्र माना गया है, इसलिए ओंम् को तारक मन्त्र भी कहते हैं। तारक मन्त्र का स्थान आज्ञा चक्र है। इस मूल नाद की सिद्धि से साधक भवसागर को पार कर लेता है। तारा शक्ति को वेदों में वाक् शक्ति, उपनिषदों में प्रणव शक्ति तथा पुराणों में गौरी नाम से जानी जाती है। ताराशक्ति आध्यात्मिक उपलब्धि, शुभ इच्छा, सनातन विद्या और ज्ञान का प्रतीक है। तारा अक्षौभ्य है अर्थात् जो कभी भी क्षुब्ध नहीं होती है। भगवान शिव और भगवान बुद्ध को भी 'अक्षौभ्य' कहा जाता है। तारा का उद्देश्य है कि मनुष्य अपनी अज्ञानता दूर कर ज्ञान प्राप्त कर मुक्त हो जाय अर्थात् अज्ञान रूपी संसार सागर को पार कर ले। यह सांसारिक बन्धनों, विपत्तियों और कठिनाइयों से मुक्ति प्रदान करती है।

त्रिपुरा सुंदरी

त्रिपुरा सुंदरी तीसरी महाविद्या है। त्रिपुरा सुंदरी को श्री विद्या भी कहा जाता है, साथ ही इसे ललिता, राजराजेश्वरी, षोडशी, महा त्रिपुरसुंदरी, बाला पञ्चदशी भी कहा जाता है। यह मन, बुद्धि तथा चित्त में निवास करती है, इसलिए इसे त्रिपुरा कहते हैं। ये अपने उपासकों को भुक्ति और मुक्ति दोनों प्रदान करती है। किसी भी प्रकार के निर्माण कार्य को सम्पन्नता यही प्रदान करती है। यह स्थूल, सूक्ष्म, तुरीय तथा परा चारों रूपों में स्थित होती है। शिवात्मक सूर्यशक्ति का नाम षोडशी है। इस कामकला, इच्छाशक्ति या कामनाशक्ति को तंत्रशास्त्र में कामेश्वरी, षोडशी या त्रिपुरा सुंदरी कहते हैं। कामेश्वरी से जब सृजन का कार्य प्रारंभ होता है तो वह त्रिपुरा सुंदरी कहलाती है। 'त्रि' का अर्थ तीन है 'पुर' का अर्थ नगर तथा सुंदरी का तात्पर्य सबसे विलक्षण अपूर्व सौंदर्य की मूर्ति। तीनों नगरों में जो सबसे सुन्दर हो जिसमें सौंदर्य की पराकाष्ठा, पूर्णता का आभास हो वह त्रिपुरा सुन्दरी है।[24] **ललितासहस्त्रनाम** के अनुसार 'अनेक जन्मों में जिसने अनेक विद्याओं की उपासना की है, वही अपने अंतिम जन्म में श्री विद्या का साधक होता है।'[25]

भुवनेश्वरी

दश महाविद्याओं में भगवती 'भुवनेश्वरी' चतुर्थ महाविद्या है। वृद्धिगत विश्व के अधिष्ठान त्र्यंबक सदाशिव है उनकी शक्ति भुवनेश्वरी है। देवीभागवत में उपलब्ध विवरण के अनुसार सूर्य

---

23 सरस्वती, स्वामी निरंजनानन्द. *तंत्र दर्शन.* देवघरः श्री पञ्चदशनाम परमहंस अलख बाड़ा पनिया पगार, रिखिया, 1993, पृष्ठ संख्या- 82.

24 सरस्वती, स्वामी निरंजनानन्द. *तंत्र दर्शन.* देवघरः श्री पञ्चदशनाम परमहंस अलख बाड़ा पनिया पगार, रिखिया, 1993, पृष्ट संख्या 85.

25 ललितासहस्त्रनाम, पृष्ठ संख्या- 21.

उत्पन्न हुआ, सोम की आहुति हुई, इससे यज्ञ हुआ, यज्ञ से त्रिलोक का निर्माण हुआ। तीनों भुवन उत्पन्न हो गये तीनों भुवनों पर षोडशी की सत्ता थी। भुवनों को उत्पन्न कर उनका संचालन करती हुई, वही शक्ति भुवनेश्वरी बन गई।[26] **देवीभागवत पुराण[27]** के अनुसार देवी को इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति युक्त बताया गया है। यह समस्त प्रकार के भय का नाश करती है। निर्माण तथा क्रियाओं का निर्धारण भुवनेश्वरी के द्वारा होता है। भुवनेश्वरी का एकाक्षर मन्त्र **'ह्री'[28]** है।

त्रिपुरा भैरवी

त्रिपुरा भैरवी पंचम महाविद्या है। भैरवी के अनेक प्रकार हैं- सिद्धि भैरवी, त्रिपुरा भैरवी, चैतन्यभैरवी, कमलेश्वरी, सम्पत्प्रदा, कौलेशी, कामेश्वरी, षट्कूटा, नित्या, रुद्र, भद्र, भैरवी आदि। त्रिपुर भैरवी ईश्वर की क्रियाशक्ति का प्रतीक है। क्रिया शक्ति का सम्बन्ध तप या तपस्या से है। तपस्या किसी एक अवस्था में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया है। तंत्र में अग्नि शक्ति को ही त्रिपुर भैरवी कहा जाता है। इसे दुर्गा नाम से भी जाना जाता है। इसकी उत्पत्ति देवताओं के तेज से हुई है। दुर्गा को अग्निवर्णा भी कहा जाता है। उसका शरीर अग्नि के समान है तथा उसके शरीर से ज्वालायें उत्पन्न होती है।

योग में जिसे कुण्डलिनी शक्ति कहते हैं, वह त्रिपुर भैरवी का ही रूप है। इसके दो रूप है- सुषुप्त रूप तथा जाग्रत रूप। सुषुप्त कुण्डलिनी तपस्या की शांत और एकचित्त अवस्था है। जाग्रत होने पर कुण्डलिनी की उत्तेजित शक्ति है। कुण्डलिनी शक्ति मूलाधार में सुषुप्त अवस्था में स्थित रहती है। मूलाधार में स्थित त्रिकोण में निवास करने के कारण कुण्डलिनी शक्ति या त्रिपुर भैरवी को 'त्रिकोणान्तर दीपिका' भी कहते हैं।

त्रिपुर भैरवी के जागरण से सभी प्रकार के भेद-भाव नष्ट हो जाते हैं। भैरवी को पृथ्वी तत्व की देवी भी कहा जाता है। जब भैरवी का जागरण होता है तो यह सभी अवस्थाओं को भेद कर ऊपर चढ़ती है और परम तत्व या शिव से मिल जाती है।

छिन्नमस्ता

छिन्नमस्ता छठी महाविद्या है। तंत्र में छिन्नमस्ता का वर्णन महाप्राणशक्ति के रूप में किया गया है। महाप्राणशक्ति में प्रकाश तथा नाद का समन्वय होता है। महाप्राण के अभाव में किसी को भी शक्ति नहीं मिल सकती है। यही शक्ति पुरुष तथा प्रकृति को जाग्रत करती है अर्थात् शक्ति प्रदान करती है जिससे पुरुष तथा प्रकृति अपने आप को विकसित और अनुभव कर पाए। परिवर्तनशील जगत का अधिपति चेतन कबंध शिव है, उनकी शक्ति का नाम छिन्नमस्ता है। इसकी साधना से

[26] शतपत ब्राह्मण- 4/2/5/14.

[27] देवीभागवत पुराण- 12/12/26.

[28] बहादुर, श्री राजा देवनंदन सिंह. *शाक्त प्रमोद.* बम्बई: खेमराज कृष्णदास प्रकाशन, 2018, पृष्ठ संख्या- 194.

सम्पूर्ण कामनायें पूर्ण हो जाती हैं। योगियों के अनुसार कि मणिपुर चक्र के नीचे की नाड़ियों में काम और रति का स्थान है।[29] रति पर छिन्नमस्ता आरूढ़ है, इसका ऊर्ध्व प्रवाह होने पर रूद्र ग्रंथि का भेदन होता है। छिन्नमस्ता का बीज मन्त्र **'हं'** तथा **'हुं'** है। साधक इस मन्त्र के जाप से मन को पार करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

धूमावती

धूमावती सातवीं महाविद्या है। इसका जगत में आलस्य, निद्रा, अचेतना और विस्मृति से संबंध रहता है। धूमावती का कोई पुरुष न होने के कारण यह विधवा कहलाती है। यह दरिद्रता की देवी है। जीवों में मृत्यु, असाध्य रोग, कलह आदि यह देवी उत्पन्न करती है। **तमसः पारं दर्शयति धूमावती** अर्थात् यह शक्ति तमस से पार जाने का मार्ग बताती है। देवी महात्म्य में कहा गया है कि **'कालरात्री, घोररात्री, मोहरात्री च दारुणः'** अर्थात् देवी का वह रूप जो काल के लिए भी रात्रीस्वरुप हो, धूमावती का रूप है।[30]

धूमावती उत्तराम्नाय की देवी है। शत्रु के मारण, मोहन, उच्चाटन आदि के लिए धूमावती की पूजा का विधान है। इससे सम्बद्ध ग्रन्थ में पूजा का विधान है। प्राणतोषिणी तन्त्र में देवी के आविर्भाव का वर्णन किया गया है। धूमावती का बीज मन्त्र **धूं** होता है। धूमावती की साधना है कि असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर मृत्यु से अमरत्व की ओर जाने की धारणा करके अपने मूल स्वरुप को प्राप्त करना ही धूमावती की साधना है।

बगलामुखी

बगला महाविद्या आठवीं महाविद्या है। बगला शब्द 'वल्गा' (लगाम) का अपभ्रंश है। वल्गा का अर्थ है निग्रह करने वाली या लगाम या रास। बगलामुखी को वल्गामुखी, बगला, पीताम्बरा तथा ब्रह्मास्त्र विद्या भी कहते हैं। बगला शक्ति शारीरिक, मानसिक तथा वाचिक शक्ति को स्तंभित कर देती है जैसे लगाम घोड़े की शक्ति एवं क्रिया को स्तंभित कर देती है। इसलिए बगला को 'स्तम्भन शक्ति' भी कहते हैं। बगला महाविद्या 'श्री कुल' से संबधित है। इस विद्या को 'ब्रह्मास्त्र विद्या' के नाम से भी जाना जाता है। बगलामुखी साधना का मुख्य उद्देश्य मन की वृत्तियों को रोकना है।

इसकी उपासना वाम तथा दक्षिण दोनों ही मार्गो में स्वीकार की गई है। चूंकि बगलामुखी महाविद्या 'श्रीकुल' के अंतर्गत् आती है। जिसमें शक्ति की उपासना इन्द्रियों का निग्रह कर गुरु के निर्देशन में करनी चाहिए। इसकी साधना में वीरभाव और दिव्यभाव दोनों को स्वीकार किया गया है।

मातंगी

---

[29] बहादुर, श्री राजा देवनंदन सिंह. *शाक्त प्रमोद.* बम्बई: खेमराज कृष्णदास प्रकाशन, 2018, पृष्ठ संख्या- 222.

[30] सरस्वती, स्वामी निरंजनानन्द. *तंत्र दर्शन.* देवघर: श्री पञ्चदशनाम परमहंस अलख बाड़ा पनिया पगार, रिखिया, 1993, पृष्ठ संख्या- 116.

मातंगी नौवी महाविद्या है। मातंगी को सुमुखी उच्छिष्टचाण्डालिनी अथवा महापिशाचिनी के नाम से जाना जाता है। ये दक्षिण तथा पश्चिम आम्नाय की देवी है। इस देवी का सम्बन्ध मन के साथ होता है। इस देवी शक्ति का अनुभव साधक अपने जीवन में वैखरी या शब्द शक्ति के रूप में करता है। मातंगी की साधना में 'नाद योग साधना' का समावेश किया गया है। मातंगी देवी के दो बीज मन्त्र **हीं** और **हूँ** है। साधना की प्रारंभिक अवस्था में स्थूल से स्थूल तथा सूक्ष्म से सूक्ष्म नाद को सुनने का प्रयास किया जाता है। नाद योग की साधना में साधक बाह्य ध्वनियों को सुनते-सुनते ध्वनि के प्रति सजग होने लगता है, जिससे चेतना का विस्तार होता है और आतंरिक सजगता बढ़ने लगती है। प्रारंभ में झरने की आवाज, सागर की लहरों की आवाज फिर मृदंग, ढोल, नगाड़े, बांसुरी और वीणा की आवाज सुनाई देती है। इसके पश्चात् पश्यन्ति नाद सुनाई देता है और अंत में अनाहत नाद सुनाई देता है।

कमला

दश महाविद्या में कमला अंतिम महाविद्या है। धूमावती और कमला एक दूसरे के विरुद्ध गुण और स्वभाव वाली होती हैं। धूमावती दरिद्रा है जबकि कमला लक्ष्मी है। इसकी साधना पद्दति त्रिपुरा सुंदरी से मिलती जुलती है। कमला देवी की विद्या भी श्री विद्या से सम्बंधित है और बीज मन्त्र **'श्री'** है।

निष्कर्ष

शक्ति चेतन, जड़, जंगम, स्थावर आदि में व्याप्त है । यह इच्छा, ज्ञान, क्रिया, चित् एवं आनंद शक्ति में रूपांतरित होकर समस्त जगत का संचालन करती है। यह महाशक्ति सम्पूर्ण विश्व को आत्मप्रकाश से अभिव्यक्त कर रही है। शक्ति के अनेक स्वरूप है जिन्हें दश महाविद्याओं के रूप में वर्णित है। अनेक स्वरुप के कारण ही शक्ति जीव भाव एवं ईश्वर भाव को ग्रहण करते हुए लीला करती है। साधक इन स्वरूपों को जीवन काल में योग, मंत्र, ज्ञान, ध्यान इत्यादि उपायों द्वारा अनुभूत कर सकता है। इन अभ्यासों द्वारा साधक अहं भाव से मुक्त होकर भेद दृष्टि को त्याग देता है फलत: अद्वैत भाव में स्थित हो जाता है। शक्ति के स्वरुप का ज्ञान होने पर साधक कल्याण के मार्ग की ओर गमन करने लगता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मालवीय, डॉ. सुधाकर एवं अन्नपूर्णा मालवीय. *शक्तिसंगमतंत्रम्.* वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरिज ऑफिस, 2021.
2. सरस्वती, स्वामी सच्चीदानंद. शक्तिसूत्र. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2020.
3. बहादुर, श्री राजा देवनंदन सिंह. *शाक्त प्रमोद.* बम्बई: खेमराज कृष्णदास प्रकाशन, 2018.

4. सरस्वती, स्वामी निरंजनानन्द. *तंत्र दर्शन.* देवघर: श्री पञ्चदशनाम परमहंस अलख बाड़ा पनिया पगार, रिखिया, 1993.
5. *श्री दुर्गासप्तशती.* गोरखपुर: गीताप्रेस, 2002.
6. *देवीभागवत पुराण.* गोरखपुर: गीताप्रेस, सं. 2067.
7. आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा. *तंत्र महाविज्ञान द्वितीय खंड.* मथुरा: शेखर प्रिंटलेंड, वृन्दावन दरवाजा, 1966.
8. आनंद, डॉ. श्यामाकान्त द्विवेदी. *शक्तितत्व एवं शाक्त-साधना.* वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2015.
9. महामहोपध्याय, प. गोपीनाथ कविराज. *तांत्रिक वांग्मय में शाक्त दृष्टि.* पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, 2000.
10. महामहोपध्याय गोपीनाथ कविराज. तांत्रिक साहित्य. उत्तर प्रदेश: हिन्दी समिति, 1972.
11. आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा. *मार्कण्डेय पुराण द्वितीय खंड.* बरेली: संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब वेद नगर, 1990.